इन खिनका है जो लटका, जीत चलो भांवें हार।
महामत हेत कर कहें साथ को, बिध बिध की करत पुकार।। १५ ।।

श्री महामतिजी सुन्दरसाथ को प्रेम से तरह-तरह से समझाकर कहते हैं कि इस संसार की लीला एक पल की है। इसमें माया में मग्न रहकर हारकर चलो या धनी से प्रेम करके जीतकर चलो, यह तुम्हारे हाथ में है।

।। प्रकरण ।। ८९ ।। चौपाई ।। १२५८ ।।

राग मारू

साथ जी सोभा देखिए, करे कुरबानी आतम।
वार डारों नख सिख लों, ऊपर धाम धनी खसम।। १ ।।

हे साथजी! धाम धनी श्री राजजी महाराज की पहचान कर, नख से शिख तक, अर्थात् तन, मन, जीव न्यौछावर करके सुन्दरसाथ में शोभा लो।

लिख्या है फुरमान में, करसी कुरबानी मोमिन।
अग्यारे सै साल का, सो आए पोहोंच्या दिन।। २ ।।

कुरान में लिखा है कि ग्यारह सौ साल बाद मोमिन ही कुर्बानी करेंगे। वह समय अब आ गया है।

देख्या मैं विचार के, हम सिर किया फरज।
बड़ी बुंजरकी मोमिनों, देखो कौन क्यों देत करज।। ३ ।।

मैंने दिल में विचार करके देखा कि श्री राजजी महाराज ने हमारे सिर पर सुन्दरसाथ को जगाने का काम सौंपा है। अब मोमिनों की बड़ी भारी साहेबी है। अब देखते हैं कि कौन कितना जागनी का काम करके अपना फर्ज निभाता है।

करी कुरबानी तिन कारने, परीछा सबकी होए।
करें कुरबानी जुदे जुदे, सांच झूठ ए दोए।। ४ ।।

मैंने वह फर्ज निभाया है, कुर्बानी करके दिखाई है। अब सबकी परीक्षा होनी है। अब सच्ची आत्माएं और झूठे जीव अलग-अलग तरीके से कुर्बानी देंगे। जिससे पहचान हो जाएगी कि कौन ब्रह्मसृष्टि है और कौन जीवसृष्टि है।

कस न पाइए कसौटी बिना, रंग देखावे कसौटी।
कच्ची पक्की सब पाइए, मत छोटी या मोटी।। ५ ।।

कसौटी पर कसने से ही सोने की परख होती है। उसी तरह से कुर्बानी से कच्चे ईमान वाले जीवों की और पक्के ईमान वाली ब्रह्मसृष्टि की पहचान होती है।

कसौटी कस देखावहीं, कसनी के बखत।
अबहीं प्रगट होएसी, जुदे झूठ से निकस के सत।। ६ ।।

अब कसनी का समय है। कुर्बानी से ही सबकी परीक्षा होगी। झूठे जीव माया को छोड़ नहीं सकेंगे तथा सच्ची ब्रह्मसृष्टि माया को तुरन्त छोड़ देगी। इससे जीव और ब्रह्मसृष्टि की पहचान हो जाएगी।

Nijanand App

करत कुरबानी सकुचें, मोमिन करे न कोए।
तीन गिरो की परीछा, अब सो जाहेर होए।।७।।

कुर्बानी करने में मोमिन संकोच नहीं करेंगे। ब्रह्मसृष्टि, ईश्वरीसृष्टि और जीवसृष्टि की पहचान अब कुर्बानी से हो जाएगी।

कहा कहुं वतन सैयां, जो मगज लगे अर्थ।
कुरबानी समे देख्या चाहिए, सांचे सूर समर्थ।।८।।

अपने घर की ब्रह्मसृष्टियों को मैं क्या कहूं जो इस समय भी माया में लगी हैं। कुर्बानी के समय उन्हें अपने सच्चे साथियों को देखकर उनका साथ निभाना चाहिए।

कुरबानी को नाम सुन, मोमिन उलसत अंग।
पीछे हुते जो मोमिन, दौड़ लिया तिन संग।।९।।

कुर्बानी का नाम सुनते ही मोमिनों के अंग में उमंग की लहरें उठती हैं और जो मोमिन पीछे रह गए थे वह भी कुर्बानी देने के समय दौड़कर आ जाते हैं।

मोमिन एही परीछा, जोस न अंग समाए।
बाहेर सीतलता होए गई, मांहें मिलाप धनी को चाहे।।१०।।

कुर्बानी के समय में मोमिनों के अंग में खुशी नहीं समाती। वह माया के झूठे सुखों से विमुख हो जाते हैं, क्योंकि उनके अन्दर धनी से मिलने की चाहना लगी है।

सुनत कुरबानी मोमिन, होए गए आगे से निरमल।
इत एक एक आगे दूसरा, जाने कब जासी हम चल।।११।।

मोमिन कुर्बानी का नाम सुनते ही माया के विकार छोड़कर निर्मल हो जाते हैं और होड़ में एक दूसरे से आगे होकर कुर्बानी करने को तैयार रहते हैं (हम कब धाम चलेंगे की होड़ में)।

मोमिन बड़ा मरातबा, सो अब होसी जाहेर।
छिपे हुते दुनियां मिने, सो निकस आए बाहेर।।१२।।

मोमिनों का बड़ा दर्जा है। वह अब जाहिर हो जाएंगे। अभी तक वह दुनियां में छिपे थे। अब उनकी कुर्बानी ने उनको जाहिर कर दिया।

सांचे छिपे ना रहें, अपने समें पर।
दोस्त कहे धनी के, सो छिपे रहें क्यों कर।।१३।।

सच्चे मोमिन कुर्बानी के समय पर छिपे नहीं रह सकते। कुरान में इनको खुदा (श्री राजजी) का दोस्त कहा है, इसलिए यह छिपे कैसे रह सकते हैं?

जो होए आतम धाम की, सो अपने समें पर।
अपना सांच देखावहीं, भूले नहीं अवसर।।१४।।

जो परमधाम की आत्मा होगी वह कुर्बानी के समय पर अपनी सच्चाई दिखाएगी और समय को हाथ से नहीं जाने देगी।

जो भूले अब को अवसर, सो फेर न आवे ठौर।
नेहेचे सांचे न भूलहीं, इत भूलेंगे कोई और।।१५।।

जो इस समय भूल गए तो दुबारा यह समय मिलने वाला नहीं, इसलिए यह निश्चित है कि मोनिन नहीं भूलेंगे, और कोई भले ही भूल जाए।

Nijanand App

आया दरवाजा धाम का, सांचों बाढया बल।
आए गए छाया मिने, धनी छाया निरमल।। १६ ।।

जिनको धाम की पहचान हो गई है उनका आत्मिक बल बढ़ गया है। वह झूठी दुनियां में आ जरूर गए थे पर धनी की कृपा ने उनको निर्मल कर दिया।

साफ सेहेजे हो गए, करने पड़या न जोर।
रात मिटी कुफर अंधेरी, भयो रोसन वतनी भोर।। १७ ।।

मोमिन बिना ताकत लगाए तारतम वाणी से सरलता से ही निर्मल हो गए। उनके अज्ञान का अन्धकार मिट गया और घर के ज्ञान का सवेरा हो गया (घर की पहचान हो गई)।

कुरबानी सुन सखियां, उलसत सारे अंग।
सुरत पोहोंची जाए धाम में, मिलाप धनी के संग।। १८ ।।

घर चलने की खबर सुनकर मोमिन बड़े खुश होते हैं। उनकी सुरता परमधाम में धनी के मिलाप में लग जाती है।

मोमिन बल धनीय का, दुनी तरफ से नाहें।
तो कहे धनी बराबर, जो मूल सरूप धाम माहें।। १९ ।।

मोमिन का बल धनी का प्रेम है। वह दुनियांवी अहंकार से हट गए हैं। उनको धनी के बराबर कहा गया है, क्योंकि उनकी परआतम परमधाम में है।

लड़कपने सुध न हुती, तो भी मोमिन मूल अंकूर।
कोई कोई बात की रोसनी, लिए खड़े थे जहूर।। २० ।।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि अनजाने में भले ही मैंने सतगुरु श्री देवचन्द्रजी के अन्दर विराजमान धनी को नहीं पहचाना पर परमधाम का मूल अंकूर होने से धनी के ज्ञान की रोशनी हृदय में आती थी।

अब तो किए धनिऐं जाग्रत, दई भांत भांत पेहेचान।
तोड़ दई आसा छल की, क्यों सकुचे करत कुरबान।। २१ ।।

धनी ने जागृत वाणी देकर तरह-तरह से पहचान करा दी है और माया से छुड़ा दिया है, तो अब कुर्बानी करने में क्यों संकोच करें।

अब तो धनी बल जाहेर, आयो अलेखे अंग।
ए जिन दिया सो जानहीं, या जिन लिया रस रंग।। २२ ।।

अब तो धनी की बेशुमार शक्ति मेरे अन्दर आ गई है। इसे जिसने दिया है वह धनी जानते हैं या मैं, जिसने उसका आनन्द लिया है।

ए दुनी न जाने सुपन की, न जाने मलकूती फरिस्तन।
ए अछर को भी सुध नहीं, जाने स्याम स्यामा मोमिन।। २३ ।।

इस आनन्द को सपने के ब्रह्माण्ड की जीवसृष्टि तथा बैकुण्ठ के फरिश्ते कैसे जान सकते हैं? अक्षर को भी इस आनन्द की खबर नहीं है। इसको श्री राजजी, श्यामाजी और ब्रह्मसृष्टि ही जानती हैं।

मैं मेरे धनीय की, चरन की रेनु पर।
कोट बेर वारों अपना, टूक टूक जुदा कर।। २४ ।।

मैं अपने धनी की चरण-रज पर अपने तन के करोड़ों बार टुकड़े-टुकड़े करके कुर्बान कर दूं (ऐसा मन में आता है)।

Nijanand App

अंग अंग सब उलसत, कुरबानी कारन।
जरे जरे पर वार हूं, ए जो बीच जरे राह इन।।२५।।

कुर्बानी के वास्ते मेरे सारे अंगों में उमंग भरी है और इस रास्ते के एक-एक कण पर मैं अपने आपको कुर्बान करती हूं।

जिन दिस मेरा पिउ बसे, तिन दिस पर होऊं कुरबान।
रोम रोम नख सिख लों, वार डारों जीव सों प्रान।। २६ ।।

जिस दिशा में मेरे धनी बसते हैं उस रास्ते पर मैं अपने रोम-रोम, नख से शिख तक जीव को प्राण सहित कुर्बान कर दूं।

सूरातन सखियन का, मुख थें कह्यो न जाए।
महामत कहें सो समया, निपट निकट पोहोंच्या आए।। २७ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि अब कुर्बानी का समय निकट आ गया है। मोमिन बहादुरी की वह कुर्बानी करेंगे जिसका वर्णन इस मुख से नहीं होता।

॥ प्रकरण ॥ ९० ॥ चौपाई ॥ १२८५ ॥

राग श्री

आगूं आसिक ऐसे कहे, जो माया थें उतपन।
कोट बेर मासूक पर, उड़ाए देवें अपना तन।। १ ।।

श्री महामति जी कहते हैं कि हे सुन्दरसाथजी! इस माया में पहले भी आशिक हुए हैं, जिन्होंने अपने माशूक पर करोड़ों बार अपने तन को कुर्बान कर दिया है।

जीव माया के ऐसी करें, कैयों देखे दृष्ट।
ओ भी उन पर यों करें, तो हम तो हैं ब्रह्मसृष्ट।। २ ।।

ऐसे आशिकों को बहुतों ने देखा है। यदि माया के जीव ऐसा कर सकते हैं तो हम तो ब्रह्मसृष्टि हैं। कुर्बानी से क्यों पीछे हटें?

धिक धिक पड़ो तिन समझ को, जो पीछे देवें पाए।
कुरबानी को नाम सुन, क्यों न उड़े अरवाहें।। ३ ।।

ऐसे सुन्दरसाथ जो कुर्बानी से पीछे हटते हैं, उनकी समझ पर धिक्कार है। कुर्बानी का नाम सुनते ही उन्हें अपनी अरवाहें छोड़ देनी चाहिएं।

जो नकल हमारे की नकल, तिनका होत ए हाल।
तो पीछे पांउं हम क्यों देवें, हम सिर नूरजमाल।। ४ ।।

हमारी नकल फरिश्ते और फरिश्तों की नकल जीवसृष्टि है। वह यदि इतनी कुर्बानी कर सकते हैं तो हम तो ब्रह्मसृष्टि हैं। हमारे धनी श्री राजजी महाराज हैं तो कुर्बानी से हम क्यों पीछे हटें?

जो आसिक असल अर्स की, सो क्यों सकुचे देते जिउ।
करे कुरबानी कोट बेर, ऊपर अपने पिउ।। ५ ।।

जो धाम धनी के असल आशिक हैं वह अपने जीव तक की कुर्बानी देने में संकोच नहीं करेंगे। वह अपने प्राण श्री राजजी महाराज पर कुर्बान होने के लिए करोड़ों बार तैयार रहेंगे।

Nijanand App